JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेश कुमार गोलाडा
पी.एच.डी शोधार्थी
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर

डॉ. मीनाक्षी मीश्रा
प्राचार्य
भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य "**बी.एड द्विवर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियो के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन**" है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है तथा न्यादर्श के रूप में राजस्थान के जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के कुल 600 प्रशिणार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। प्रदतों के संकलन हेतु अनुशासन योग्यता परीक्षण –स्वयं निर्मित उपकरण को अपनाया गया। प्रदतों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि जयपुर जिले के बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर पाया गया।

- **प्रस्तावना :–**

जब नवजात शिशु जन्म लेता है तो वह असहाय तथा असामाजिक होता है वह न तो बोलना जानता है न ही चलना–फिरना। उसे न ही सामाजिक रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं का ज्ञान होता है परन्तु जैसे–जैसे वह समय के साथ बडा होता जाता है वैसे–वैसे उस पर शिक्षा का औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से प्रभाव पडता जाता है। इस प्रभाव के कारण जहा एक ओर बालक में शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वही दूसरी ओर सामाजिक भावना भी विकसित होती रहती है जिसके परिणामस्वरूप वह धीरे–धीरे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए तैयार होने योग्य हो जाता है। इस प्रकार हम यह देखते है कि बालक के व्यवहार में परिवर्तन होने लगता हैं। यह परिवर्तन सकारात्मक हो इसके लिए शिक्षा की परम आवश्यकता होती है। शिक्षा के द्वारा ही हम अपना विकास सुव्यवस्थित रूप से कर सकते है।

वर्तमान समय में देश में अध्यापक शिक्षा के अनेक महाविद्यालय हैं जिनमें कई प्रकार के पाठयक्रमों का सफल संचालन किया जा रहा है। जैसे–द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम तथा प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम आदि हैं। इनमें प्रशिक्षण प्राप्त करके ऐसे शिक्षको का निर्माण हो रहा हैं जो विषयवस्तु के साथ विभिन्न शिक्षण कौशलो तथा क्षमताओं से परिपूर्ण हो रहे हैं तथा उनमें अनुशासन का भी विकास किया जा रहा है

विभिन्न सामाजिक व्यवहारों के अवलोकन से प्रशिक्षणार्थी की शिक्षा में क्या दशा है ? उनके पास अनुशासन का स्तर कैसा है ? क्या शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में अंतर पाया जाता है ? क्या प्रशिक्षणार्थी अपने महाविद्यालयी उपागमों से संतुष्ट है या नहीं? प्रशिक्षणार्थियों से समाज अनुशासन की अपेक्षा रखता है। इस पृष्ठभूमि में भी यह उत्कृष्ठा उत्पन्न होती है कि भारतीय समाज से संदर्भित प्रशिक्षणार्थियों में अनुशासन की प्रवृति कैसी है? क्या विभिन्न वर्ग के प्रशिक्षणार्थी के अनुशासन में अंतर पाया जाता है? इसी प्रकार क्या दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों से अधिक अनुशासित है अथवा नहीं ? इन सभी प्रश्नों के समाधान की तलाश में शोधकर्त्ता ने बी.एड द्विवर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियो के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन अनेक संदर्भों के अवलोकन तथा पुनरावलोकन के बाद में रेखाकिंत किया गया हैं।

- **समस्या कथन –"बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन।"**

- **उद्देश्य :–**

1. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम तथा बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- **परिकल्पनाएं :–**

1. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर नहीं हैं।

- **न्यादर्श –**

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान के लिए जनसंख्या विभिन्न शिक्षक महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राएँ है, जिनकी संख्या लाखों में है। इस सम्पूर्ण जनसंख्या पर शोध कार्य करना सम्भव नहीं हैं। अतः अध्ययन में धन, समय व साधनों की सीमित मात्रा के कारण शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु अभिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इस शोध कार्य में प्रयुक्त न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के कुल 12 महाविद्यालयों में अध्ययनरत कुल 600 प्रशिक्षणार्थियों को, जिसमें 200 बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के, 200 बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम के तथा 200 बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणाथियों का यादृशिक विधि से चयन किया गया है।

- **तकनीकी शब्दों की व्याख्या (Explanation of concepts) :–**
  - **शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय**– ऐसे महाविद्यालय जहॉ प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षक बनने का प्रशिक्षण दिया जाता हैं।
  - **एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय –**ऐसे महाविद्यालय जहॉ सामान्य स्नातक शिक्षा के साथ–साथ शिक्षक शिक्षा भी प्रदान की जाती हैं।
  - **प्रशिक्षण –**प्रशिक्षण बालक के क्रियात्मक पक्ष से संबंधित होता है जिसमें प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षणार्थी के क्रियाकलापों तथा व्यवहारों में अपेक्षित परिवर्तन संभव बनाया जा सकता है।

- **शोध में प्रयुक्त उपकरण –**

अनुसंधान कर्ता ने शोधकार्य के दौरान अनुशासन स्तर की योग्यता परीक्षण हेतु स्वयं निर्मित उपकरण का प्रयोग करके शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों से दत्त संकलन का कार्य किया।

- **आँकड़ो का विश्लेषण तथा व्याख्या–**

परिकल्पना 1

''बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर नहीं हैं।''

प्रशिक्षणार्थी	प्रतिदर्श	माध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी	200	113.17	13.57	10.48	0.05	0.01
चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी	400	123.90	6.75		अस्वीकृत	अस्वीकृत

($df=N_1+N_2-2=200+400-2=598$)

उपरोक्त परिकल्पना में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की अनुशासन सम्बन्धी योग्यता के आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है, जिसमें 200 बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी व 400 एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी से सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाया गया तथा प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित किया गया, जिसमें ज्ञात हुआ है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 113.17 व एकीकृत पाठ्यक्रम के बी.ए.–बी.एड तथा बी.एससी–बी.एड के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 123.90 प्राप्त हुआ तथा इनके मानक विचलन क्रमशः 13.57 व 6.75 प्राप्त हुए। इसके आधार पर इनका क्रांतिक अनुपात ज्ञात करने पर यह 10.48 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 598 के विश्वास के स्तर 0.05 पर प्राप्त मान 1.96 से अधिक तथा विश्वास के स्तर 0.01 पर प्राप्त मान 2.59 से भी अधिक है। अतः दोनों ही सारणीमान गणनाकृत मान से कम है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर पाया गया।

परिकल्पना 2

बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर नहीं हैं।

प्रशिक्षणार्थी	प्रतिदर्श	माध्य	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
बी.ए.–बी.एड. पाठ्यक्रम प्रशिक्षणार्थी	200	125.07	5.53	3.49	0.05	0.01
बी.एससी.–बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी	200	122.74	7.62		अस्वीकृत	अस्वीकृत

($df=N_1+N_2-2=200+200-2=398$)

उपरोक्त परिकल्पना में बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की अनुशासन सम्बन्धी योग्यता के आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है, जिसमें 200

बी.ए.–बी.एड. एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी व 200 बी.एससी.–बी.एड. एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों से सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाया गया तथा प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित किया गया, जिसमें ज्ञात हुआ है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी.ए.–बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 125.07 व एकीकृत पाठ्यक्रम के बी.एससी–बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 122.74 प्राप्त हुआ तथा इनके मानक विचलन क्रमशः 5.53 व 7.62 प्राप्त हुए। इसके आधार पर इनका क्रांतिक मान (t) ज्ञात करने पर यह 3.49 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 398 के विश्वास के स्तर 0.05 पर प्राप्त मान 1.98 से अधिक तथा विश्वास के स्तर 0.01 पर प्राप्त मान 2.59 से भी अधिक है। अतः दोनों ही सारणीमान गणनाकृत मान से कम है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् बी.ए.–बी. एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के अनुशासन में सार्थक अंतर पाया गया।

- **प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर इसका शैक्षिक उपयोग निम्नानुसार है –**

1. प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्षों से लाभ उठाकर शिक्षक कक्षा में ऐसा वातावरण प्रदान कर सकेगें जिससे प्रशिक्षणार्थियों में अनुशासन का विकास हो सकेगा।
2. प्रशिक्षणार्थियो को अपनी अनुशासन संबंधित योग्यता के विकास हेतु विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं जैसे– वाद–विवाद, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि में भाग लेना चाहिए।
3. माता और पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों में अनुशासित जीवन व्यतीत करने के गुणों का विकास करना चाहिए। अतः उनके निर्णयों व कार्यो को स्वीकार करना चाहिए एवं गलती होने पर प्यार से समझाना चहिए।

- **भावी शोध हेतु सुझाव –**

1. भावी शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों तथा डिग्री महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को भी न्यादर्श के रूप में लिया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध 600 प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित रखा गया है। भावी शोध में न्यादर्श के रूप में और अधिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में हिन्दी माध्यम के शिक्षा महाविद्यालयों को लिया गया है, इसमें अंग्रेजी माध्यम तथा संस्कृत महाविद्यालयों के प्रशिक्षणाथियों को शामिल किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध राजस्थान के जयपुर जिले तक ही सीमित रखा है। आगामी शोध राजस्थान के अन्य जिलों पर भी किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध में बी.एड द्विवर्षीय तथा बी.ए.–बी.एड व बी.एससी–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणाथियों को शामिल किया गया है। आगामी शोध हेतु डी.एल.एड. तथा विशेष शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को लिया जा सकता है।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची –**

1. कौल, लोकेश :– ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'' नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.
2. शर्मा, आर.ए. :– ''शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया '', लाल बुक डिपो, मेरठ.
3. डॉ. मंगल, अंशु "शैक्षिक अनुसंधान की विधियां" समक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी राधा प्रकाश मंदिर, आगरा।
4. डॉ. रायजादा, बी.एस. –"शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
5. डॉ. माथुर, एस.एस. "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

6- http//www.education.nic.in

7- http//www.educationindia.net/download/research

8- http//www.scholaryexchange.org

9- http//www.shodhganga.inflibnet.ac.in